उन्नत किस्मो का चयन–

मध्य प्रदेश के लिये उन्नत जातियों का चयन उनकी विशेषताओं के आधार पर करना चाहिये।

क्र.	किस्म कानाम	अवधि (दिन)	उपज (क्विं/हैक्ट)	प्रमुख विशेषताये
1.	टी.जे.एम–3	60–70	10–12	ग्रीष्म एवं खरीफ दोनो के लिए उपयुक्त,फलियाँ गुच्छो में लगती है, एक फली मे 8–11 दाने, पीला मोजेक एवं पर्णदाग रोग के प्रति सहनशील
2.	पूसा विशाल	60–65	12–14	ग्रीष्म एवं खरीफ दोनो के लिए उपयुक्त, पौधे मध्यम आकार के (55–70 सेमी.), दाना मध्यम चमकीला हरा, पीला मोजेक रोग सहनशील
3.	एच.यू.एम.1 (हम–1)	65–70	8–9	ग्रीष्म एवं खरीफ दोनो के लिए उपयुक्त, पौधे मध्यम आकार के (60–70 सेमी.), एक फली मे 8–12 दाने, पीला मोजेक एवं पर्णदाग रोग के प्रति सहनशील
4.	पी.डी.एम. 139	55–60	10–12	ग्रीष्म एवं खरीफ दोनो के लिए उपयुक्त, शीघ्र पकने वाली, पौधे मध्यम आकार के (60–70 सेमी.), एक पौधे मे 40–55 फलियाँ, एक फली मे 8–12 दाने, पीला मोजेक रोग के प्रति सहनशील
5.	आई.पी.ए.म. 410–3 (शिखा)	65–70	10–12	ग्रीष्म एवं खरीफ दोनो के लिए उपयुक्त, पीला मोजेक रोग के प्रति सहनशील
6.	आई.पी.ए.म. 205–7 (विराट)	60–62	10–12	ग्रीष्म एवं खरीफ दोनो के लिए उपयुक्त, पीला मोजेक रोग के प्रति सहनशील
7.	एम.एच–421	60–62	10–12	ग्रीष्म एवं खरीफ दोनो के लिए उपयुक्त,शीघ्र पकने वाली, पौधे मध्यम आकार के (60–65 सेमी.), एक पौधे मे 55–55 फलियाँ, पीला मोजेक रोग के प्रति सहनशील

कीट नियंत्रण

5 लीटर देशी गाय का मठा लेकर उसमे 15 चने के बराबर हींग पीसकर घोल दें, इस घोल की बीजों पर डालकर भिगो दें तथा 2 घंटे तक रखा रहने दें उसके बाद बोवाई करें। यह 1एकड़ घोल की बीवनी के बीजों के लिए पर्याप्त है।

5 देशी गाय के गौमूत्र में बीज भिगोकर उनकी बोवाई करें, दीमक से पौधा सुरक्षित रहेगा लीटर दीमक से बचाव हेतु बोवाई करने से पहले बीजों को कैरोसिन से उपचारित करें। 250 मिली नीम (नीम पानी बनाने के लिए 25 किलो नीम की पत्तियों को अच्छी तरह से पीसकर 50 लीटर पानी में तब तक उबालें जब तक की 20–25 पानी लीटर न रह जाए पानी, उसके बाद उसे उतारकर छानकर उपयोग करें।

500 ग्राम लहसुन 500 ग्राम तीखी हरी मिर्च लेकर बारीक पीसकर 150–200 लीटर पानी में घोलकर फसलों पर छिडकाव करें इससे इल्ली रस चूसक कीड़े नियंत्रित होंगे। बेशरम के पते 3 किलो एवं धतूरे के फल तोड़कर 3 3 लीटर पानी में उबालें आधा पानी शेष बचने पर उसे छान लें, इस पानी में 500 ग्राम चने डालकर उबालें. ये चने चूहों के बिलों के पास शाम के समय डाल दें, इससे चूहों से निजात मिलेगी।

कटाई

मूंग की फलियाँ गुच्छों में लगती हैं, पूरी फसल में फलियों को 2–3 बार में तोड़ लिया जाता है।

उपज

वर्षाकालीन फसल से 10–12 वि/हेक्टेयर तथा ग्रीष्मकालीन फसल 12–15 वि/हेक्टेयरतक में दाने की उपज प्राप्त हो जाती है।

गो–आधारित

कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर

जिला – नर्मदापुरम

ग्रीष्मकालीन मूंग की उन्नत जैविक खेती

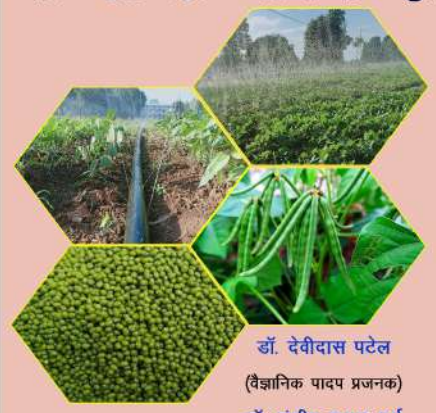

डॉ. देवीदास पटेल

(वैज्ञानिक पादप प्रजनक)

डॉ. संजीव कुमार गर्ग

(वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख)

डॉ. राजेंद्र पटेल

(वैज्ञानिक – शस्य विज्ञान)

कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर, होशंगाबाद

भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास गोविंदनगर

पलिया पिपरिया, तह– बनखेड़ी , जिला – नर्मदापुर , म.प्र.

Mail– kvkgovindnagar2017@gmail.com

www.kvknarmadapuram.com

भूमि का चुनाव

इसकी खेती विभिन्न प्रकार की मृदाओं जैसे हल्की से भारी मिट्टी पर की जाती है, उत्तरी भारत में गहरी उचित जल निकास वाली दोमट व दक्षिणी भारत की लाल मृदाऐं जिनमें दोमट मिट्टी अच्छी मानी जाती है लेकिन सिंचाई का अछा प्रबंध होना चाहिए।

भूमि की तैयारी

रबी की फसल काटने के तुरंत बाद पलेवा करना चाहिए, खेत में ओट आने पर एक जुताई तथा बाद की जुताई मिट्टी पलटने वाले तवेदार हैरो तथा दूसरी जुताई देशी हल अथवा कल्टीवेटर से करके भलीभाँती पाटा लगाना चाहिए ताकि खेत समतल हो जाए और अधिक नमी बनी रहे।

बीजदर

खरीफ मौसम में बीजदर 12–15 किग्रा प्रति हैक्टेयर प्रयोग करते हैं तथा बीवाई पंक्तियों में सेमी की दूरी पर करना चाहिए, रबी तथा ग्रीष्म मौसम में मूंग के लिए बीजदर 20 किग्रा/हेक्टेयर रखना चाहिए तथा बोवाई कतारों में 30 सेमी की दूरी पर करनी चाहिए।

बीजोपचार

200 ग्राम जैविक खाद 10 किलो ग्राम बीज के उपचार के लिए पर्याप्त होता है। पहले गुड या चीनी को गर्म पानी में घोलकर 10% का घोल बनाया जाता है तथा इसे ठंडा होने दिया जाता है। तत्पश्चात इस गुड के घोल में जैविक खाद तथा बीज अच्छी तरह से मिला लेते हैं ताकि बीजों पर एक पर्त बन जाए, बीज को छाया में सुखाते हैं। दलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाने के लिए तथा लागत को कम करने के लिए इस प्रकार की जैविक खाद का प्रयोग–दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इससे वातावरण की नुक्सान नहीं होता है, न तो ये जल में घुलकर अन्य उर्वरक की तरह जल को प्रदूषित करते हैं और न ही वायु को प्रदूषित करते हैं वरन इसके साथ–साथ फसल चक्र में उपयोग की जाने वाली बाद की फसल की भी पहुंचता लाभ है। इसीलिये इन्हें पर्यावरण मित्र कहा जाता है।

ध्यान देने योग्य बातें

बीजोपचार के समय गर्म घोल का प्रयोग नहीं होना चाहिए, घोल के ठन्डे होने पर ही इसका प्रयोग करना चाहिए। बीजोपचार के बाद बीजों को छाया में सूखने दें। बीजोपचार के बाद आधा से एक घंटे के अंतराल में ही इसकी बोवाई कर देनी चाहिए।

बोवाई का समय – खरीफ मौसम में मूंग की बोवाई मानसून आने पर मध्य जून से जुलाई के प्रथम पखवाड़े के मध्य करना चाहिए। उत्तर प्रदश,पंजाब, हरियाणा, दिल्ली,पश्चिम बंगाल तथा बिहार में मूंग की खेती ग्रीष्म मौसम में की है जाती. इन राज्यों में मूंग को गन्ना, गेहूं, आलू आदि की कटाई के बाद बोते हैं, इन राज्यों में ग्रीष्म (बसंत) मौसम में मूंग की बोवाई मध्य आर्च से अप्रैल तक की जाती है।

खाद – खाद का प्रयोग मृदा परि क्षण के आधार पर करना श्रेयस्कर होगा, उत्तम उपज के लिए कम्पोस्ट 65–75 कि तथा नीम की खली 40 किग्रा/हेक्टेयर, अच्छी तरह से जमीन में मिलाकर बोवाई करने से पहले, पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा अन्य 2–3 जुताइयाँ देशी हल या कल्टीवेटर द्वारा करनी चाहिए।

सिंचाई – मूंग की ग्रीष्मकालीन फसल को 2–3 सिंचाइयों की आवश्यकता पड़ती है, वर्षाकालीन फसल में सूखा पड़ने की स्थिति में आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए जब फसल पूर्ण पुष्प अवस्था पर ही तो उस समय कोई भी सिंचाई नहीं करना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

दाने वाली फसल की निराई–गुड़ाई बोवाई के 20–25 दिन बाद करना आवश्यक है, दूसरी निराई गुड़ाई बोवाई के 45 दिन बाद करनी चाहिये।

मूंग की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग

पीला मोजैक

इस रोग के कारण नई पत्तीयाँ पीली हो जाती हैं, पत्तियों की शिराओं का किनारा पीला पड़ जाता है और बाद में पूरी पत्ती ही पीली पड़ जाती है।

चारकोल विगलन

रोग का प्रमुख लक्षण पौधों की जड़ों तथा तनों का विगलन (सड़न) है।

वर्ण चित्ती

इसके लक्षण पत्तियों पर प्रायः वृताकार व्यास के धब्बे से प्रकट होते हैं, कभी–कभी रोगग्रस्त भागों के साथ में मिलने से बड़ा अनियमित आकार का धब्बा बन जाता है, धब्बों का रंग बैंगनी लाल तथा भूरा है होता, फलियों पर भी इसका असर आ जाता है

रोग नियंत्रण

बीमारी आने पर इलाज करने से अच्छा है की बीमारी आने ही न दें इसलिए रोगमुक्त, विषमुक्त और तंदुरुस्त बीज की बोवनी करनी चाहिए। अगर किसान ओरगेनिक खेती कर रहा है तो उपरोक्त बीमारियाँ आने का चांस ही नहीं है।

मूंग की फसल में लगने वाले प्रमुख कीट फली

फली बेधक कीट इस फसल का प्रमुख कीट है, इस कीट की सूडियाँ फलियों में दाना पड़ते समय फलों में दाना पड़ते समय फली में छेद करके दाने को खा जाती हैं।